International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1369-1370

कबीरदास की भक्ति–भावना में विरह–अनुभूति

निशा देवी
सहायक प्रवक्ता, सी.आर.ए. कालेज, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

कबीरदास भक्ति काल के प्रमुख कवि कबीरदास ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हुए समस्त धर्मों के अनुयायियों को एक मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया है। उनकी कविता का मूल्य स्वर भक्ति है। भक्ति ही उनके काव्य और जीवन की प्रतिबद्धता और प्राण थी। ईश्वरानुराग ही उनका सर्वस्व था, भक्ति के गर्भ से ही उनकी कविता की उत्पति हुई है। इतना ही नहीं, कबीर भक्ति को ही भवसागर से मुक्ति का साधन मानते हैं। कबीर की भक्ति शास्त्रानुमोदित भक्ति नहीं है, वह व्यावहारिक जीवन की साधुता और सहजता से समन्वित है वह ''भाव भगति'' है। वह जॉति–पॉति, काम–धाम, चमक–दमक, दिखावा–पहनावा आदि बाह्याचारों से बहुत ऊपर की वस्तु है। कबीर पहले भक्त हैं, फिर कवि। उनके द्वारा रचित साखी, सबद और रमैनी में कवित्व की शक्ति समाहित है। उन्होंने अपना पंथ, अपना दर्शन स्वतः निर्मित किया है, यह निर्मिति उन्होंने स्वानुभूति के सहारे की है। इसी चिन्तन के कारण कबीर ने कहा है कि दर्शन का दर्पण जब तक स्वानुभूति के प्रकाश से प्रकाशित नहीं होता, तब तक साधक को सत्स्वरुप का सुदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता है।

निर्गुण उपासना

कबीर निराकार ब्रह्म के उपासक हैं। उन्होंने सर्व व्यापी, सर्वशक्तिमान, निर्गुण राम की उपासना की है। उनकी मान्यता रही है कि वह फूलों की सुगंध से भी पतला, अजन्मा और निर्विकार है वह विश्व के कण –कण में है। उसे कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है। जैसे मगृ की नाभि में कस्तूरी छिपी रहती है और मगृ उस सुगन्ध का स्त्रोत बाहर ढूंढने का प्रयास करता है, उसी प्रकार मनुष्य राम को जगह–जगह ढूँढता है जबकि वह उसके भीतर ही विद्यामान् होता है।

कस्तूरी कुण्डलि बसै, मगृ ढूंढे वन माहिं।
ऐसे घट–घट राम हैं, दुनियां देखे नाहिं।

कबीरदास ने ऐसे ईश्वर के सर्वव्यापी होने की बात पर बल दिया है। वह मानता है कि ईश्वर कण–कण में समाया है हर मन में उसका निवास है इसलिए उसे ढूंढने की आवश्यकता नहीं है उसे एकाग्र मन से याद करने की आवश्यकता है।

प्रियतम को पतिया लिखूँ, को कहीं होय विदेस।
तन में, मन में, नैन में, ताकौ कहा सन्देश।

एकेश्वर वाद

कबीर ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध किया और एकेश्वरवाद का सन्देश सुनाया। ब्रह्म ने ही ब्रहमा, विष्णु, महेश आदि को बनाया है। इसलिए निराकार ब्रह्म ही महत्वपूर्ण है। अवतार तो जन्म–मरण के बन्धन से ग्रसित हैं–

अक्षय पुरुष इक पेड है, निरंजन बाकी डार।
त्रिदेवा शाखा भयें पात भया संसार।

अलौकिक प्रणयानुभूति

कबीर के काव्य में परमात्मा के प्रति अलौकिक प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति की गई है। कबीर वैसे तो खण्डन–मण्डन की राह पर चलते रहे और हिन्दू–मुसलमानों को खरी–खोटी सुनाते रहे पर अपनी रहस्यवादी रचनाओं में से वे अत्सन्त मष्दुल और कोमल दिखाई देते हैं। कबीर के रहस्यवाद पर शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव है–

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलाहें समाना, यह तत कहो गयानी।

कबीर ने सर्वव्यापी ईश्वर की चर्चा की है जो कण–कण में और हर शरीर में समाया हुआ है। इसके आधार पर जहॉ एकेश्वरवाद की स्थापना होती है वहीं मानवतावाद का स्वरुप भी उभर आता है।

राम नाम महिमा

कबीरदास का ईश्वर पर अटूट विश्वास और उनके प्रति अनन्य भक्ति है, उन्होंने अपने आराध्य के लिए विभिन्न नामों का प्रयोग किया है। जिनमें राम, साईं, हरि, रहीम, खुदा, अल्लाह आदि प्रमुख हैं। वे इन सभी नामों को पूर्ण श्रद्धाभाव से लेते हैं, उनके मन में सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार ईश्वर की आराधना का प्रबल स्वरुप विद्यमान था। वे हर व्यक्ति को जगाकर ईश्वर का भक्त बनाना चाहते थे इसलिए कहते थे–

ज्यों तिल माहिं तेल ज्यों चकमक में आगि।
तेरा साईं तुज्झ में, जाग सकै तो जागि।

कबीर ने विभिन्न नामों में ''राम'' नाम को पूरी गम्भीरता से और बार–बार लिया है। यह सर्व विदित तथ्य है कि कबीर निगुर्ण राम के उपासक हैं। वे बार–बार नाम स्मरण की प्रेरणा देते हुए कहते हैं–

कबीर निर्भय राम जपु, जब लागे दीवा बाति।
तेल धटा बाती बुझे, तब सोवो दिनराति।

भक्ति स्वरुप

कबीरदास की भक्ति भावना में नवधा भक्ति के कई रुप सामने आते हैं। यह नवधा भक्ति बहुत कुछ श्री मद्भागवत से भी समानता रखती है, श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वन्दन, दास्य और वात्सल्य आदि रुप पूर्ण गम्भीरता से प्रकट हुए हैं।

गुणगान

कबीर निर्गुण राम की लगातार चर्चा करते हुए उसका गुणगान करते हैं–

निरमल–निरमल राम गुण गावे, सो भगता मेरे मन भावे।
जे जन लेहिं राम को नाऊं, ताको मैं बलिहारी जाऊं।

वात्सल्य रुप

कबीर के काव्य में यत्र–तत्र वात्सल्य का मन भावन रुप सामने आता है। कबीर स्वयं को बालक और ईश्वर को जननी के रुप में मान्यता देते हुए कहते हैं–

हरि जननी मैं बालक तोरा
काहे ना अवगुन बकसहु मेरा।

दास्य रुप

कबीर अपने आराध्य की साधना में पूर्ण–रुपेण तत्पर दिखाई देते हैं। उनकी सेवा भक्त के रुप में ही नहीं, सेवक के रुप में दिखाई देती है–

कबीर कूता राम का मूतिया मेरा नाऊं।
गले राम की जेवडी, जित खींचे तित जाऊॅं।

कान्ता रुप

कबीरदास ईश्वर भक्ति में लीन होकर उनके दर्शन के अभिलाषी हैं। दर्शन न होने पर बिरही हो जाते हैं ऐसे में उनकी बिरह उन्हें तपाती है–

बिरह कमण्डल कर लिये, बैरागी दोऊ नैन।
मांगै दरस मधूकरी, छके रहैं दिन रैन।

ईश्वर की कान्ता भाव से स्मरण करते हुए स्वयं को उनकी पत्नी के रुप में प्रस्तुत किया है, अपने पति ईश्वर को याद करती हुई कवि की आत्मा आवाज देती है–

दुलहिन गावहु मंगलचार
हम घर आयहु राजा राम भरतार।

तन्मयता रुप

कबीर अपने प्रियतम के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं वे अपने प्रियतम के साथ एकाकर होना चाहते हैं। यह रुप भक्ति के चरम उत्कर्ष को प्रकट करता है–

आंखिन की करि कोठरि, पुतरी पलग बिछाय।
पलकन की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय।

कबीर की भक्ति भावना में कबीर राम के विभिन्न गुणों की उपासना करते हैं और गुण सम्पन्न बन जाते हैं। इसके पश्चात् वे निर्गुण –निराकाम् की उपासना करते हुए सामने आते हैं। उनकी उपासना में अनन्यता और अटल भक्ति का स्वरुप प्रकट होता है।

निष्कर्ष

कबीर की भक्ति–भावना में प्रेम को आकर्षक और प्रभावी महत्व दिया गया है। उनका मानना है कि मानव–प्रेम में भी ईश्वर की कृपा होती है। कण–कण में समाया राम ही मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रेरणाधार है। कबीर की भक्ति भावना सार्वलौकिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। वह एक ओर अत्यन्त सरल और सहज है, तो दूसरी और माया से आबद्ध होने पर सर्वाधिक कठिन और कष्टसाध्य भी है। इसका मुख्य कारण है कि कबीर की भक्ति भाव–प्रधान है। उनकी भक्ति में बाह्याडंबर और भौतिक विधानों को कोई स्थान नहीं दिया गया है। कबीर की भक्ति सहज है। वे ऐसे मंदिर के पुजारी है जिसकी फर्ष हरी–हरी घास, जिसकी दिवारें दसों दिशाएॅं हैं, जिसकी छत नीले आसमान की छतरी है। यह साधना स्थल सभी मनुष्य के लिए खुला है। कबीर की भक्ति में एकाग्र मन, सतत साधना, मानसिक पूजा–अर्चना, मानसिक जाप और सत्संगति को विशेष महत्व दिया गया है। यह निर्विवाद रुप से कहा जा सकता है कि कबीर की भक्ति भावना मानवतावाद को प्रतिष्ठित करने वाली सहज और आकर्षक साधना भाव–मय है।

संदर्भ

1. कबीरदास के सामाजिक आदर्शों की स्थापना
2. कबीरदास द्वारा दासता से मुक्ति का संदेश
3. कबीरदास की भक्ति भावना
4. धर्म के प्रति स्वाभाविक प्रकृति
5. कबीरदास की सामाजिक चेतना